National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 2; Issue 2; May 2017; Page No. 115-116

अष्टांगिक मार्ग का छात्रों के चरित्र निर्माण में उपादेयता

[1] बालेश्वर नाथ पाण्डेय, [2] डॉ0 नीता सिन्हा

[1] अतिथि प्रवक्ता सी0 एम0 पी0 डिग्री कालेज, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश भारत।
[2] एसोसिएट प्रोफेसर सी0.एम0.पी. डिग्री कालेज, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश भारत।

प्रस्तावना

वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में छात्रों में व्यवसायिक कुशलता एवं विकास पर विशेष ध्यान रखा जा रहा है। व्यवसायिक कुशलता के साथ ही साथ व्यवसायिक नैतिकता एवं चारित्रिक विकास भी शिक्षा का महत्वपूर्ण दायित्व है। वर्तमान समय में सफल व्यवसायी के व्यवसायिक नैतिकता एवं चारित्रिक विखण्डन के अनेकानेक प्रमाण देखने को मिल रहे हैं, जिनके कारण अनैतिकता एवं भ्रष्टाचार जैसी गतिविधियों को बढ़ावा मिलता है। इसी को ध्यान में रखकर महात्मा बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग की चरित्र निर्माण में उपादेयता को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संदर्भित किया गया है।

बौद्ध धर्म दर्शन के अनुसार चतुर्थ आर्य सत्य में दुःख से निरोध संभव है, के अन्तर्गत अष्टांगिक मार्ग को दुःख निरोध हेतु महत्वपूर्ण पथ बताया गया है।

अष्टांगिक मार्ग

1. सम्यक् दृष्टि 2. सम्यक् संकल्प 3. सम्यक् वाक्
4. सम्यक् कर्मान्त 5. सम्यक् आजीविका 6. सम्यक् व्यायाम
7. सम्यक् स्मृति 8. सम्यक् समाधि

महात्मा बुद्ध ने दुःख का मूल कारण अविद्या को माना है। अविद्या के फलस्वरूप मिथ्या दृष्टि का प्रादुर्भाव होता है। मिथ्या दृष्टि की प्रबलता के कारण अवास्तविक वस्तु को वास्तविक समझा जाता है, जो आत्मा नहीं है, अर्थात् अनात्म है, उसे आत्मा माना जाता है। मिथ्या दृष्टि से प्रभावित होकर मनुष्य नश्वर विश्व को अविनाशी एवं दुःखमय अनुभूतियों को सुखमय समझता है। मिथ्या दृष्टि का अन्त सम्यक् दृष्टि से ही संभव है। इसीलिए बुद्ध ने सम्यक् दृष्टि को आष्टांगिक मार्ग की प्रथम सीढ़ी कहा है। वस्तुओं के यथार्थ स्वरूप को जानना ही सम्यक् दृष्टि है। सम्यक् दृष्टि से तात्पर्य चार आर्य सत्यों का यथार्थ ज्ञान है। चार आर्य सत्यों का ज्ञान ही मानव को निर्वाण की तरफ ले जाता है। चारित्रिक निर्माण में सम्यक् दृष्टि का महत्वपूर्ण योगदान है। किसी तत्व के प्रति यथार्थ एवं मौलिक ज्ञान किसी भी चरित्र की महान विशेषता है। इस प्रकार सम्यक् दृष्टि एवं यथार्थपूर्ण एवं मजबूत चरित्र निर्माण में सहायक है।

सम्यक् दृष्टि सर्वप्रथम सम्यक् संकल्प में रूपांतरित होता है। महात्मा बुद्ध के चार आर्य सत्यों का जीवन में पालन करने का निश्चय ही सम्यक् संकल्प है। आर्य सत्यों के ज्ञान से मानव अपने को लाभान्वित तभी कर सकता है। जब वह उनके अनुसार जीवन व्यतीत करता हो, इसीलिए निर्वाण के आदर्श को अपनाने के लिए एक साधक को ऐन्द्रिय विषयों से अलग रहने, दूसरे के प्रति द्वेष तथा हिंसा के विचारों को त्याग करने का संकल्प करना चाहिए। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि जो अशुभ है उसे न करने का संकल्प ही सम्यक् संकल्प है। इसमें त्याग और परोपकार की भावना सन्निहित है।

चरित्र निर्माण में सम्यक् संकल्प की महत्वपूर्ण भूमिका है। शुभ–अशुभ एवं नैतिक–अनैतिक के बीच अन्तर करना किसी भी चरित्र का महान कार्य है। महान एवं आदर्श चरित्र निर्माण में सम्यक् संकल्प महत्वपूर्ण उपागम के रूप में प्रयुक्त होता है।

सम्यक् वाक्, सम्यक् संकल्प की अभिव्यक्ति अथवा उसका वाह्य रूप है। कोई व्यक्ति सम्यक् वाक का तभी पालन कर सकता है जब वह निरन्तर सत्य एवं प्रिय बोलता हो। सिर्फ सम्यक् वचनों का प्रयोग ही सम्यक् वाक् के लिए पर्याप्त नहीं है, जिस वचन से दूसरों को कष्ट मिलता है उसका परित्याग करना वांछनीय है। इस प्रकार सत्य एवं प्रिय वचनों का प्रयोग ही 'सम्यक् वाक्' है। दूसरों की निंदा करना, आवश्यकता से अधिक बोलना भी सम्यक् वाक् का विरोध करना है। इसीलिए कहा गया है। 'मन को शान्त करने वाला एक शब्द हजार निरर्थक शब्दों से श्रेयस्कर है।'

सम्यक् वाक् की चरित्र निर्माण में विशेष भूमिका है। यथार्थपूर्ण एवं प्रयोजनवादी चरित्र स्वयं एवं समाज के लिए श्रेयस्कर होता है। निरर्थक एवं निन्दा में तल्लीन रहने वाले चरित्र की सदैव अवहेलना ही की जाती है। यथार्थ एवं अर्थपूर्ण वाक्पटुता चरित्र का विशिष्ट गुण माना गया है, जो चरित्र को आदर्श एवं महान बनाने में सक्षम है।

निर्वाण प्राप्त करने के लिए साधक को सिर्फ सम्यक् वाक् का पालन करना ही पर्याप्त नहीं है। सत्य भाषी एवं प्रिय भाषी होने के बावजूद कोई व्यक्ति बुरे कर्मों को अपनाकर पथभ्रष्ट हो सकता है। सम्यक् कर्मान्त का अर्थ है बुरे कर्मों का त्याग। महात्मा बुद्ध के अनुसार बुरे कर्म तीन हैं– हिंसा, अस्तेय, इन्द्रिय भोग। सम्यक् कर्मान्त इन तीनों कर्मों का प्रतिकूल होगा। अहिंसा अर्थात दूसरे जीवों की हिंसा नहीं करना, अस्तेय अर्थात् दूसरे की सम्पति नहीं चुराना, इन्द्रिय संयम अर्थात् इन्द्रिय सुख का त्याग करना ही सम्यक् कर्मान्त कहा जाता है। महात्मा बुद्ध ने भिन्न–भिन्न श्रेणियों के लोगों के जैसे– गृहस्थ, भिक्षु इत्यादि के लिए भिन्न–भिन्न प्रकार के कर्मों को करने का आदेश दिया है।

सम्यक् कर्मान्त का चरित्र निर्माण में विशेष योगदान है। ईमानदार, लोकप्रिय एवं अहिंसावादी चरित्र निर्माण में सम्यक् कर्मान्त के माध्यम से मानव उपयोगी चरित्र निर्माण का विकास सम्भव है तब मानव, मानव से बुद्ध की तरफ अग्रसर होता है। चरित्र की चित्तवृत्तियों पर अंकुश स्थापित करके देवत्व एवं निर्वाण की प्राप्ति करने एवं चरित्र को उच्चतम् शिखर तक स्थापित करने में सम्यक् समाधि का महत्वपूर्ण योगदान है।

महात्मा बुद्ध द्वारा बताये गये आर्य अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण करके व्यवहारिक एवं आध्यात्मिक चरित्र को सामान्य से सर्वोत्तम एवं मनुष्य से देवत्व के साथ ही बन्धन से बन्धन मुक्त या निर्वाण प्राप्ति के लिए तत्पर किया जा सकता है। मानव से बुद्धत्व एवं बुद्धत्व से निर्वाण में चारित्रिक उत्थान हेतु आर्य अष्टांगिक मार्ग अति उपयोगी एवं महत्वपूर्ण उपागम का कार्य करता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. सिन्हा प्रो0 हरेन्द्र प्रसाद भारतीय दर्शन की रूप–रेखा, मोती लाल बनारसी दास चौक, वाराणसी।
2. पाण्डेय, रामशकल और चतुर्वेदी, ममता, उदीयमान, भारतीय समाज में शिक्षक, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा (2004)।

3. एन0आर0 स्वरूप, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, आर0लाल बुक डिपो (2010)।
4. www.nss.nic.in
5. www.digitalindia.gov.in
6. https://india.gov.in